संपादकीय

तुरत-फुरत का कारोबार, ई-कॉमर्स में भरोसेमंद रोजगार के अवसर बनें

हाल के वर्षों में देश में खरीदारी का परिदृश्य, ई-कॉमर्स के चलते पूरी तरह बदल गया है। कह सकते हैं कि इसकी अर्थव्यवस्था एक महत्वपूर्ण दौर में पहुंच रही है। जिसकी पुष्टि हाल ही में सामने आई शोध परामर्शदात्री 'इन्फिसम' की नवीनतम रिपोर्ट में उजागर होती है। रिपोर्ट के अनुसार भारत में इस क्षेत्र में वर्ष 2024 में होने वाले 125 अरब डॉलर के कारोबार के मुकाबले साल 2030 तक इसके लगभग तीन गुना यानी 345 अरब डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। जो ई-कॉमर्स के क्षेत्र में आ रहे बदलावकारी परिदृश्य को ही दर्शाता है। निस्संदेह, इस कारोबार विस्तार में बदलाव का यह मापदंड प्रभावशाली है, लेकिन इसकी रफ्तार के साथ इसका लंबे समय तक टिके रहना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। इसमें दो राय नहीं कि देश में क्विक कॉमर्स ग्रोथ के एक महत्वपूर्ण इंजन के तौर पर उभर रहा है। आज स्थिति यह है कि इसके नेटवर्क देश के 475 से अधिक शहरों तक पहुंच चुके हैं। जो यह दर्शाता है कि दैनिक उपभोग की वस्तुओं की तेजी से डिलीवरी अब महज बड़े शहरों तक ही सीमित नहीं रह गई है। दरअसल, यह बदलाव जनसंख्या के स्वरूप के अलावा भौगोलिक स्तर पर भी हो रहा है। नई पीढ़ी इस तुरत-फुरत खरीदारी की मुरीद है। सर्वे बताते हैं कि देश में ऑनलाइन खरीदारों में वह पीढ़ी काफी आगे है, जिसे आज जेन-ज़ी के नाम से संबोधित किया जाता है। उसके पास सामान का ऑर्डर करने और उसे पाने में इंतजार करने का समय नहीं है। बताया जाता है कि ऑनलाइन खरीदारी में जेन-ज़ी की भागीदारी लगभग एक तिहाई है। ऐसे में भरोसा किया जा रहा है कि इस दशक के अंत तक वे डिजिटल खर्च करने वाले सबसे बड़े ग्रुप बन जाएंगे। बाजार के जानकार मान रहे हैं कि ई-कॉमर्स की अगली लहर किसी सीमा तक छोटे शहरों, स्थानीय पसंद, स्थानीय भाषाओं में कंटेंट और सस्ते लॉजिस्टिक पर भी निर्भर करेगी। हालांकि, परंपरागत बाजार इसे अपने अस्तित्व के लिये बड़ी चुनौती मान रहा है। नई पीढ़ी के ग्राहक मोबाइल पर उत्पाद की कीमतें छानकर परंपरागत दुकानदारों से भाव-तौल करने में आगे हैं। उन्हें पता होता है कि किसी उत्पाद की ऑनलाइन कीमत क्या है और दुकान में वह सामान किस भाव मिल रहा है। निस्संदेह, इस ई-कॉमर्स के विस्तार से हमारा परंपरागत बाजार प्रभावित हुआ है। कई मॉलों व परंपरागत बाजारों में पहले जैसी रौनक नहीं रह गई है। लेकिन ई-कॉमर्स का एक लाभ यह भी है कि लोगों को भीड़-भाड़ व ट्रैफिक जाम में फंसने के बजाय आसानी से वक्त-बेवक्त सामान घर पर उपलब्ध हो जाता है। निस्संदेह, ई-कॉमर्स ने बाजार में प्रतिस्पर्धा को भी बढ़ावा दिया है। कई ई-कॉमर्स कंपनियां कड़े कंप्टीशन का सामना कर रही हैं। इस बाजार में ब्लिंकइट अब भी सबसे आगे है। इस दौड़ में फिर जेप्टो और स्विगी इंस्टामार्ट भी शामिल हैं। इस ई-कॉमर्स बाजार में पहले से मौजूद रिटेलर्स और आने वाले प्रतियोगी अपने डार्क-स्टोर नेटवर्क को बढ़ा रहे हैं। जिसका मकसद कार्यप्रणाली में तेजी लाकर मुनाफा बढ़ाना है।

विनोद शर्मा, संपादक

परिप्रश्नेन प्रज्ञा, विमृश्य निर्णयः श्रीकृष्ण की संवादात्मक शिक्षण-पद्धति

डॉ. बृजेश कुमार साहू

जिज्ञासा से आत्मनिर्णय तक : श्रीकृष्ण की शिक्षण-पद्धति का वैशिष्ट्य

श्रीकृष्ण की शिक्षण-पद्धति में अर्जुन को कभी निष्क्रिय श्रोता अथवा केवल आदेश-पालक शिष्य के रूप में स्वीकार नहीं किया गया। अर्जुन बार-बार प्रश्न करता है, अपनी शंकाएँ प्रस्तुत करता है और कभी-कभी पूर्व प्रतिपादित विचारों के संदर्भ में पुनः जिज्ञासा प्रकट करता है— 'अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः' (भगवद्गीता, 3.36) तथा 'संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि' (5.1)। इससे स्पष्ट होता है कि कृष्णीय शिक्षण-दृष्टि में प्रश्न अनुशासनभंग नहीं, बल्कि ज्ञानान्वेषण का स्वाभाविक उपकरण है। भारतीय ज्ञानपरंपरा में इसी भाव को 'परिप्रश्न' की संकल्पना प्राप्त होती है— 'तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया' (4.34)। यहाँ प्रश्न केवल उत्तर प्राप्त करने की आकांक्षा नहीं, बल्कि सत्य के गहन अन्वेषण की बौद्धिक प्रक्रिया है।

भारतीय ज्ञान-परंपरा में श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व केवल दार्शनिक, योगेश्वर अथवा धर्मोपदेशक के रूप में सीमित नहीं है; श्रीमद्भगवद्गीता के संवाद में वे एक ऐसे शिक्षक के रूप में उभरते हैं, जिसकी शिक्षण-पद्धति आधुनिक अर्थों में संवादात्मक, समस्या-केंद्रित, मनोवैज्ञानिक, अनुभवात्मक तथा विद्यार्थी-केंद्रित दिखाई देती है। कुरुक्षेत्र में अर्जुन का संकट केवल युद्ध करने या न करने का प्रश्न नहीं था, बल्कि वह कर्तव्य, नैतिकता, आत्मपरिचय, मोह, भय, उत्तरदायित्व और निर्णय की जटिल समस्या थी। श्रीकृष्ण ने इसका समाधान किसी एक आदेश द्वारा नहीं किया, बल्कि अर्जुन की मानसिक अवस्था को समझते हुए प्रश्न, प्रतिप्रश्न, तर्क, दृष्टान्त, दार्शनिक विवेचन, योग-साधना, आत्मचिन्तन और अंततः स्वतंत्र निर्णय की प्रक्रिया अपनाई।

गीता का यह शिक्षण-मॉडल विशेषतः महत्वपूर्ण इसलिए है कि श्रीकृष्ण ज्ञान प्रदान करने के बाद अर्जुन को आदेशात्मक रूप से बाध्य नहीं करते, बल्कि कहते हैं– विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ' अर्थात् पूर्णतः विचार करके जैसा उचित समझो, वैसा करो। यह कथन शिक्षक की भूमिका को ज्ञानदाता से आगे बढ़ाकर मार्गदर्शक एवं बौद्धिक सहयात्री में परिवर्तित करता है।

आधुनिक शिक्षाशास्त्रीय विमर्श में विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा, संवाद-आधारित शिक्षण, अनुभवजन्य अधिगम, आलोचनात्मक विवेक तथा आत्मचिंतनपरक अधिगम की संकल्पनाओं को विशेष महत्त्व प्राप्त है। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि इन आधुनिक शैक्षिक अवधारणाओं के अनेक मूलभूत तत्त्व श्रीमद्भगवद्गीता के श्रीकृष्ण-अर्जुन संवाद में सहस्राब्दियों पूर्व ही एक सुव्यवस्थित शिक्षण-दृष्टि के रूप में अभिव्यक्त हुए दिखाई देते हैं।अतः प्रश्न यह नहीं है कि 'क्या श्रीकृष्ण शिक्षक थे? ', बल्कि अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि– श्रीकृष्ण की शिक्षण-पद्धति की विशिष्टता क्या थी और उसके कौन-से तत्त्व समकालीन शिक्षा के लिए प्रासंगिक हो सकते हैं?

कुरुक्षेत्र के युद्धक्षेत्र में श्रीकृष्ण की प्रारम्भिक भूमिका एक सारथी की है, किंतु श्रीकृष्ण-अर्जुन संवाद के क्रमिक विकास के साथ उनकी भूमिका केवल रथ-संचालक तक सीमित नहीं रहती। वे क्रमशः मार्गदर्शक, परामर्शदाता, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक दृष्टा, मूल्य-शिक्षक और जीवन-द्रष्टा के रूप में विकसित होते दिखाई देते हैं। इतना ही नहीं, उनकी शिक्षण-दृष्टि की परिपक्वता उस बिंदु पर पहुँचती है जहाँ वे शिष्य के निर्णय पर अपना अधिकार स्थापित करने के स्थान पर उसकी स्वतंत्र निर्णयक्षमता और स्वायत्त विवेक को स्वीकार करते हैं। इस दृष्टि से श्रीकृष्ण की शिक्षक-भूमिका भारतीय शिक्षण-परंपरा में गुरु की उस आदर्श संकल्पना को प्रस्तुत करती है, जिसका उद्देश्य शिष्य को अपने ऊपर निर्भर बनाना नहीं, बल्कि उसे इतना सक्षम बनाना है कि वह स्वयं सत्य का बोध कर सके, उचित-अनुचित का विवेक कर सके और अपने निर्णय के लिए उत्तरदायित्व स्वीकार कर सके। अर्जुन का शिक्षार्थी के रूप में प्रवेश भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वह युद्धभूमि में केवल बाहरी संघर्ष से नहीं, बल्कि गहरे मानसिक, भावनात्मक और नैतिक द्वंद्व से ग्रस्त है। उसकी स्थिति को स्वयं उसके शब्दों में देखा जा सकता है– 'कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः धर्मसम्मूढचेताः' (भगवद्गीता, 2.7)। अर्जुन स्वीकार करता है कि उसका स्वभाव दैन्य से आहत हो चुका है और उसकी चेतना धर्म के विषय में मोह तथा भ्रम से आवृत है। यहाँ श्रीकृष्ण की शिक्षण-पद्धति की पहली और अत्यंत महत्त्वपूर्ण विशेषता सामने आती है– वे समस्या के बाहरी रूप पर नहीं, उसके मूल कारण पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वे अर्जुन को तत्काल केवल 'युद्ध करो' का आदेश नहीं देते, बल्कि पहले उसके भीतर उत्पन्न मानसिक अस्थिरता, भावनात्मक विषाद और नैतिक संशय को समझते हैं। अर्थात् श्रीकृष्ण की दृष्टि में शिक्षा केवल सूचना या निर्देश प्रदान करने की प्रक्रिया नहीं है; वह शिक्षार्थी की चेतना, मनोवृत्ति, मूल्यबोध और निर्णय-विवेक के परिष्कार की प्रक्रिया है।

यहीं से श्रीकृष्ण की शिक्षण-पद्धति का एक मौलिक स्वरूप उभरता है–शिक्षण का प्रारम्भ उत्तर से नहीं, शिक्षार्थी की समस्या को समझने से होता है। वे अर्जुन की जिज्ञासा, संशय और अंतर्द्वंद्व को संवाद का आधार बनाते हैं। प्रश्न उठते हैं, प्रतिप्रश्न होते हैं, तर्क प्रस्तुत किए जाते हैं, पूर्वधारणाओं की समीक्षा होती है और अंततः अर्जुन को स्वयं निर्णय तक पहुँचने के लिए सक्षम बनाया जाता है। इस प्रकार श्रीकृष्ण की शिक्षण-पद्धति को संवादात्मक, जिज्ञासा-आधारित, चिंतनपरक, अनुभवाधारित, मूल्यपरक तथा आत्मबोधोन्मुख शिक्षण-पद्धति कहा जा सकता है। इसकी चरम परिणति भगवद्गीता के अठारहवें अध्याय में दिखाई देती है, जहाँ श्रीकृष्ण अपने उपदेश को अंतिम आदेश के रूप में प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि कहते हैं– 'विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु' (18.63)। अर्थात् समस्त विषय पर भली-भाँति विचार करने के पश्चात् जैसा तुम्हें उचित लगे, वैसा करो। यह वाक्य श्रीकृष्ण की शिक्षक-भूमिका को एक असाधारण ऊँचाई प्रदान करता है–गुरु ज्ञान देता है, दृष्टि देता है, विवेक जगाता है; किंतु निर्णय का अंतिम अधिकार शिष्य के विवेक को सौंप देता है। श्रीमद्भगवद्गीता का मूल स्वरूप ही संवादात्मक है। यह ्रूश्चठ्ठश्रद्यश्चद्दह्वद्ग नहीं बल्कि Dialogue है। यह एकपक्षीय उपदेश अथवा एकालाप नहीं, बल्कि प्रश्न, प्रतिप्रश्न, तर्क, विवेचन और आत्मचिंतन से विकसित होने वाला जीवंत संवाद है। अर्जुन केवल श्रोता बनकर श्रीकृष्ण के वचनों को ग्रहण नहीं करता; वह प्रश्न करता है, अपनी शंकाएँ व्यक्त करता है, असहमति प्रकट करता है और अनेक प्रसंगों में पुनः प्रश्न उठाकर अपने संशय का समाधान चाहता है। श्रीकृष्ण भी किसी पूर्वनिर्धारित उपदेश को यांत्रिक रूप से प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि अर्जुन की मानसिक अवस्था, जिज्ञासा और प्रश्नों के अनुरूप अपने विवेचन को क्रमशः विकसित करते हैं। इस प्रकार गीता की शिक्षण-पद्धति प्रश्न ? उत्तर ? पुनः प्रश्न ? विश्लेषण ? आत्मचिंतन ? विवेक ? निर्णय की क्रमिक प्रक्रिया के रूप में सामने आती है।

हर माँ घर लौटे – यही विकास की असली पहचान

प्रो. आरके जैन 'अरिजीत '

जब किसी माँ की जान बचती है, तो आँकड़े में एक संख्या घटती है, लेकिन किसी घर की पूरी दुनिया बच जाती है। 122 से 87 तक पहुँचा मातृ मृत्यु अनुपात इसी बदलाव का प्रमाण है। भारत सरकार के सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय की सतत विकास लक्ष्य प्रगति रिपोर्ट 2026 के अनुसार, 2015-17 में प्रति लाख जीवित जन्म पर 122 माताओं की मृत्यु होती थी, जो 2022-24 में घटकर 87 रह गई। 35 की यह कमी महज गणित नहीं; यह हर एक लाख जीवित जन्म पर 35 माताओं के बचने का अर्थ है। देशभर में इससे हजारों परिवारों की दुनिया सुरक्षित हुई है। हर घटती संख्या के पीछे एक बची माँ की साँस, बच्चे की सलामत गोद और परिवार का सुरक्षित भविष्य है।

कभी प्रसव की राह में अस्पताल से पहले मजबूरियाँ खड़ी मिलती थीं। अस्पताल दूर, सड़क खराब, वाहन का भरोसा नहीं और पैसों की तंगी अलग संकट थी। अंधविश्वास और रूढ़ मान्यताएँ प्रसव को इलाज नहीं, किस्मत के भरोसे छोड़ देती थीं। कई बार घर ही प्रसव कक्ष बनता और जटिलता बढ़ने पर मदद देर से पहुँचती। अब तस्वीर बदल रही है। नियमित जाँच, आयरन की गोलियाँ, संस्थागत प्रसव और जरूरत पर एम्बुलेंस ने मातृत्व को सुरक्षित किया है। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना और सुरक्षित मातृत्व अभियान ने भी यह भरोसा मजबूत किया है कि माँ को बचाना सुविधा नहीं, व्यवस्था की जिम्मेदारी है।

इस बदलाव की जड़ें उन गाँवों की मिट्टी में हैं, जहाँ इलाज की दूरी धीरे-धीरे घटकर लोगों की चौखट तक आ गई है। तपती दोपहर हो या स्याह रात, आशा कार्यकर्ता गर्भवती महिलाओं तक पहुँचती हैं, जाँच के लिए प्रेरित करती हैं, खतरे के संकेत समझाती हैं और जरूरत पड़ने पर अस्पताल पहुँचाती हैं। आंगनवाड़ी केंद्र पोषण और जागरूकता की कड़ी बनते हैं। नर्सें प्रसव कक्ष में रात-दिन डटी रहती हैं, डॉक्टर सीमित साधनों में भी जीवन बचाने की जद्दोजहद करते हैं। इसलिए मातृ मृत्यु में कमी किसी एक विभाग की उपलब्धि नहीं, बल्कि उन अनाम हाथों की साझा जीत है, जिन्होंने किसी माँ को मौत की देहरी तक पहुँचने से पहले थाम लिया। मातृ मृत्यु का घटता आँकड़ा दरअसल समाज की बदलती दृष्टि की कहानी भी कहता है। गर्भवती को समय पर अस्पताल पहुँचाना केवल उपचार तक पहुँचना नहीं, उसके जीवन को महत्व देना है। शिक्षित महिला खतरे के संकेत पहचानती है, सक्षम परिवार इलाज टालता नहीं और जागरूक समाज अंधविश्वास के बजाय विज्ञान का साथ चुनता है। इसलिए मातृ मृत्यु अनुपात में गिरावट स्वास्थ्य क्षेत्र की उपलब्धि भर नहीं, सामाजिक चेतना के बदलते चेहरे का आईना भी है। महिला को सिर्फ संतान जन्म देने वाली देह न मानकर अधिकार, स्वास्थ्य और सम्मान से पूर्ण मनुष्य समझना ही इस परिवर्तन की असली नींव है। संस्थागत प्रसव का 90 प्रतिशत से ऊपर पहुँचना इस बदलाव की गहराई को रेखांकित करता है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-6 के 2023-24 के आँकड़े इसकी स्पष्ट पुष्टि करते हैं। मातृ मृत्यु का घटता आँकड़ा सुकून देता है, मगर सवाल भी छोड़ जाता है–क्या 87 पर संतोष किया जा सकता है? 87 अब भी शून्य नहीं है। हर मातृ मृत्यु के पीछे एक घर की बुझी रोशनी, एक बच्चे की सूनी गोद और एक पति के कंधों पर अचानक बढ़ा जिम्मेदारियों का बोझ है। इसलिए 122 से 87 तक पहुँचना बड़ी उपलब्धि है, पर इसे मंजिल मान लेना भूल होगी। विकास केवल मृत्यु अनुपात घटने पर संतुष्ट हो जाना नहीं; विकास तब सार्थक होगा, जब प्रसव के दौरान किसी माँ की मृत्यु असामान्य और अस्वीकार्य मानी जाए–जीवन की अनिवार्य कीमत नहीं। मातृत्व सुरक्षा की असली कसौटी वहीं सामने आती है, जहाँ सुविधा की आखिरी सीमा समाप्त हो जाती है। पहाड़ी इलाकों, दूर-दराज जिलों और गरीब बस्तियों में आज भी अस्पताल तक पहुँचना आसान नहीं है। कहीं एम्बुलेंस देर से आती है, कहीं रक्त बैंक में पर्याप्त रक्त नहीं मिलता और कहीं प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मियों की कमी जटिल स्थिति को और गंभीर बना देती है। प्रसव की आपात स्थिति में कुछ मिनट भी जीवन-मृत्यु का फैसला कर सकते हैं। इसलिए योजनाएँ बनाना भर पर्याप्त नहीं; उनका ईमानदार क्रियान्वयन, मजबूत रेफरल व्यवस्था, पर्याप्त रक्त, प्रशिक्षित स्टाफ और तेज आपात सेवाएँ जरूरी हैं। आखिरी गाँव तक स्वास्थ्य सुविधा पहुँचाए बिना मातृ मृत्यु को निर्णायक रूप से घटाना संभव नहीं होगा।

माँ को बचाने की जिम्मेदारी की पहली शर्त है– उसे अकेला न छोड़ना। गर्भावस्था और प्रसव को केवल महिला का दायित्व मानने वाली सोच बदलनी होगी।

संत कृष्ण प्रिया जी ने जन्माष्टमी के अवसर पर गौशाला पहुंचकर गौ माता की पूजा कर गोग्रास खिलाया

गौ माता की सेवा और पूजा ही प्रभु सेवा है, आज आवश्यकता है गौ माता की रक्षा एवं सुरक्षा कीः देवी कृष्ण प्रिया

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

जन्माष्टमी के पावन अवसर पर भागवत कथा का श्रवण कराने खंडवा पहुंची संत देवी कृष्ण प्रिया जी जन्माष्टमी के अवसर पर प्राचीन श्री गणेश गौशाला पहुंची एवं पालने में विराजमान बाल गोपाल की पूजा अर्चना कर आरती की एवं झूला झूलाया, साथ ही गौशाला में गौ माता का पूजन अर्चन कर आरती कर गौ माताओ चने की दाल, गुड, जलेबी खिलाकर उन्हें नमन किया। समाज सेवी प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि इस अवसर गौशाला में पधारी कृष्ण प्रिया जी का स्वागत विधायक कंचन मुकेश तनवे एवं गौशाला समिति के अध्यक्ष राकेश बंसल, सचिव रामचंद्र मौर्य, भूपेंद्र सिंह चौहान, आशीष चटकेले, प्रवक्ता सुनील जैन द्वारा स्वागत अभिनंदन किया गया। दीदी ने गौशाला में कार्यरत सभी कर्मचारियों का स्वागत सम्मान किया, इस अवसर पर उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए दीदी ने कहा कि भगवान कृष्ण को

गोमाता काफी प्रिय थी, प्रतिदिन भगवान कृष्ण गौ माता की सेवा पूजा करते थे, गौ माता की सुरक्षा एवं सेवा प्रभु की सेवा है एवं इसे बहुत ही पुण्य कार्य माना गया है, गौ माता में देवी देवताओं का वास है यदि हमने गौ माता की सेवा एवं पूजा कर ली तो वह प्रभु सेवा से कम नहीं है, आज आवश्यकता है गौ माता की रक्षा की प्रत्येक परिवार एक गौ माता को अवश्य पाले, हम हम यदि घर में गौ माता को नहीं पाल सकते तो कम से कम गौशाला में पहुंचकर गौ माता की चिंता कर उनकी पूजा अर्चना कर सेवा करें, वर्तमान में चल रही सरकारों के माध्यम से तो कहीं ना कहीं गौ माता की रक्षा सुरक्षा हो रही है,लेकिन प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि गौ माता की सेवा में वे भी अपनी अहम भूमिका निभाये। इस अवसर पर श्री गणेश गौशाला मे विधायक कंचन तनवे, राकेश बंसल, रामचंद्र मोर्य, आशीष चटकेले, भूपेंद्र सिंह चौहान, प्रवक्ता सुनील जैन, अखिलेश गुप्ता, उत्तम मित्तल, शैलेंद्र अग्रवाल, पंडित चंद्रशेखर शर्मा, नारायण बाहेती, भावेश बिल्लोरे, संजय दुबे, रितेश चौहान, मंगलेश तोमर, मनोज यादव, पंकज अग्रवाल, संदेश गुप्ता, सर्वेश राठौर, राकेश मालवीया, अखिलेश परदेशी, राकेश ठाकुर, महेंद्र तंवर सहित कई श्रद्धालु उपस्थित थे।

राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए चयनित यूसीमास खंडवा के विद्यार्थी

» 8 मिनट में 200 सवालों को हल करने का हुनर दिखाएंगे

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

खंडवा जिले में प्रतिभाओं की कमी नहीं है, हर विधा में यह प्रतिभाएं अपने हुनर के माध्यम से खंडवा का नाम देश-विदेश में रोशन कर रही है, अबेकस एवं मेंटल एरिथ्मेटिक के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लगातार प्रदर्शन कर रहे यूसीमास खंडवा के 7 विद्यार्थी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए मुंबई रवाना होंगे। 5 सितंबर को मुंबई के सिडको एक्जीबिशन सेंटर में आयोजित होने वाली राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगिता में देशभर से लगभग 6000 विद्यार्थी हिस्सा लेंगे। समाजसेवी व प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि यूसीमास खंडवा के चयनित विद्यार्थी 4 सितंबर को मुंबई के लिए प्रस्थान करेंगे। ?राष्ट्रीय प्रतियोगिता को लेकर विद्यार्थियों में खासा उत्साह है।

प्रतियोगिता में प्रतिभागियों के सामने निर्धारित समय में बड़ी संख्या में सवाल हल करने की चुनौती होगी। विद्यार्थियों को महज 8 मिनट में 200 सवालों को हल करना होगा। इस दौरान केवल तेज गति से सवाल हल करना ही पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि सही उत्तर देने यानी एक्यूरेसी पर भी विशेष ध्यान देना होगा। यही चुनौती विद्यार्थियों की मानसिक गणना क्षमता, एकाग्रता, स्मरण शक्ति और त्वरित निर्णय लेने की क्षमता की परीक्षा लेगी। सुनील जैन ने बताया कि प्रतियोगिता में यूसीमास खंडवा का प्रतिनिधित्व करने वाले विद्यार्थियों में समर्थ लालवानी, मीत पटेल, स्तुति अग्रवाल, शुभ जैन, तन्मय जैन, अनय जयसवाल और अभिषेक खंडेलवाल शामिल हैं। एक्स्ट्रामाइंड्स एकेडमी के अनुराग सर और मून मैम के साथ पालकों ने भी इन विद्यार्थियों को शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

छात्रों की गूंज' को लेकर युवाओं में उत्साह, गांधी भवन पहुंचकर करा रहे रजिस्ट्रेशन

» आज से शहर में निकल कर शैक्षणिक संस्थाओं में कराया जाएगा छात्रों का रजिस्ट्रेशन

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

इंदौर में 19 सितंबर को आयोजित होने वाले कांग्रेस नेता राहुल गांधी के 'छात्रों की गूंज' कार्यक्रम को लेकर छात्र-छात्राओं में खासा उत्साह नजर आ रहा है। जिला कांग्रेस प्रवक्ता प्रेमांशु जैन ने बताया कि कार्यक्रम में शामिल होने के लिए बड़ी संख्या में विद्यार्थी गांधी भवन पहुंचकर अपना रजिस्ट्रेशन करवा रहे हैं। शहर कांग्रेस अध्यक्ष प्रतिभा रघुवंशी ने बताया कि 'छात्रों की गूंज' कार्यक्रम को लेकर छात्रों में काफी उत्साह है। विद्यार्थी स्वयं गांधी भवन पहुंचकर कार्यक्रम में शामिल होने के लिए पंजीयन करा रहे हैं। उन्होंने कहा कि युवाओं में कार्यक्रम को लेकर जिस तरह का उत्साह देखने को मिल रहा है, वह सकारात्मक संकेत है। 'जैसा कि आप सब को पता है, 'छात्रों की गूंज' इस देश के छात्रों की आवाज और इस देश के युवाओं के भविष्य पर चर्चा करने का एक प्लेटफॉर्म है जो आदरणीय राहुल गांधी ने उपलब्ध कराया है हिंदुस्तान के छात्रों को।

श्री रघुवंशी ने बताया कि शुक्रवार से कांग्रेस कार्यकर्ता शहर के विभिन्न क्षेत्रों में,शैक्षणिक संस्थाओं पर जाकर छात्रों से मुलाकात करेंगे और उन्हें कार्यक्रम की जानकारी देने के साथ ही उनका रजिस्ट्रेशन भी करवाएंगे। उन्होंने अधिक से अधिक छात्र-छात्राओं से कार्यक्रम से जुड़ने की अपील की।इस रजिस्ट्रेशन के लिए कोई शुल्क नही है। नेता प्रतिपक्ष दीपक मुल्लू राठौर ने बताया कि छात्रों को त्तक्र कोड हमारे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स से प्राप्त होगा। और जगह-जगह हम कोशिश कर रहे हैं कि कॉलेज और जो छात्र हैं, जहाँ पर छात्र इकट्ठा होते हैं–कोचिंग सेंटर्स हैं, अध्ययनशालाएँ जैसी संस्थाएँ हैं, यहाँ पर बारकोड एक-दो दिन में लग जाएँगे। छात्र जाकर वहाँ से स्कैन करके अपना रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। '

इस अवसर पर गांधी भवन में नेता प्रतिपक्ष दीपक मुल्लू राठौर,ब्लाक अध्यक्ष विशाल जैन,हुकुम मेलुन्दे,मनोज मंडलोई,डॉ शरद हरणे,जिला प्रवक्ता प्रेमांशु जैन,योगेश जांगिड़,यशवंत सिलावट,दिव्यांश ओझा,गुरप्रीत सिंघ होरा ,वकील नीलकंठ, सहित अन्य मौजूद थे।

खंडवा के कब्रिस्तान में मशीनें चलने से मचा बवाल, कब्रों को नुकसान पहुंचाया

मयंक पराशर

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

शहर के एक कब्रिस्तान में गुरुवार सुबह उस समय हंगामा मच गया, जब समाजजनों ने कब्रिस्तान परिसर में बड़ी संख्या में पेड़ों की कटाई के साथ क्रेन, जेसीबी और ट्रैक्टर-ट्रॉली मशीनें चलती देखीं। आरोप है कि मशीनों के आवागमन के दौरान कई कब्रों के ऊपर से भी मशीनें गुजरीं, जिससे कुछ कब्रें क्षतिग्रस्त हो गई और उनके निशान तक मिटने की बात सामने आई है। बताया जा रहा है कि गुरुवार सुबह एक मैयत में शामिल होने पहुंचे समाजजनों ने कब्रिस्तान में मशीनें चलते देखीं। इसके बाद मौके पर बड़ी संख्या में लोग जमा हो गए और कब्रों के ऊपर मशीनें चलाने को लेकर जमकर विरोध जताया। मामले की जानकारी मिलते ही कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने कब्रिस्तान कमेटी के सचिव डॉ. जावेद और उनके मामा को पूछताछ के लिए थाने ले जाने की जानकारी सामने आई है। वहीं वन विभाग की टीम भी मौके पर पहुंचकर पेड़ों की कटाई के मामले की जांच में जुटी है। घटना की जानकारी मिलने पर शहर काजी सैयद निसार अली, अकरम जाट, जिला वक्फ कमेटी अध्यक्ष अकरम खान उर्फ अक्का भाई, ट्रांसपोर्ट ऑनर्स संगठन अध्यक्ष रफीक भाई रफा सेठ सहित बड़ी संख्या में समाजजन कब्रिस्तान पहुंचे। समाजजनों का कहना है कि कब्रिस्तान सिर्फ जमीन का टुकड़ा नहीं, बल्कि लोगों की आस्था और पूर्वजों की यादों से जुड़ा स्थान है। कब्रों के ऊपर मशीनें चलने और उनके निशान मिटने की बात से लोगों में भारी नाराजगी है। फिलहाल मौके पर पुलिस और वन विभाग की कार्रवाई जारी है। पेड़ों की कटाई किसकी अनुमति से हुई और कब्रिस्तान में मशीनें किसके निर्देश पर चलाई गई, यह जांच के बाद ही स्पष्ट होगा।

स्वामी, भाग्यमीडिया पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक राजेश शर्मा द्वारा प्रदेश वॉच मीडिया ग्रुप 11 प्रेस काम्पलेक्स जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित कर, जी-11 प्रथम तल गोयल निकेत जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित, पिन-462011, संपादक : विनोद शर्मा, फोन नं. 0755-4512708, पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार सभी मामलों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा। RNI No. MPHIN/2016/68059